आनन्द कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
रोहतास महिला कालेज
सासाराम

बी॰ ए॰ (प्रथम वर्ष, इतिहास -प्रतिष्ठा)

वैदिक सभ्यता : उद्‌भव, राज्य, अर्थव्यवस्था एवं धार्मिक जीवन

सिंधु सभ्यता के पतन के बाद जो नवीन संस्कृति प्रकाश मे आयी उसके विषय में हमें सम्पूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिए इस काल को हम 'वैदिक काल' अथवा वैदिक सभ्यता के नाम से जानते हैं। चूँकि इस संस्कृति के प्रवर्तक आर्य लोग थे इसलिए कभी-कभी आर्य सभ्यता का नाम भी दिया जाता है। यहाँ आर्य शब्द का अर्थ - श्रेष्ठ, उदात्त, अभिजात्य, कुलीन, उत्कृष्ट, स्वतन्त्र आदि है। यह काल 1500 ई॰पू॰ से 600 ई॰पू॰ तक अस्तित्व में रहा।

स्रोत :-

(क) पुरातात्विक साक्ष्य
(ख) साहित्यिक साक्ष्य

(क) पुरातात्विक साक्ष्य - इसके अन्तर्गत ~~निम्नलि~~ निम्नलिखित साक्ष्य प्राप्त हुए हैं -

(1) चित्रित धूसर मृदभाण्ड

(2) खुदाई में हरियाणा के पास भगवानपुरा में मिले 13 कमरों वाला मकान तथा पंजाब में भी प्राप्त तीन ऐसे स्थल जिनका सम्बन्ध ऋग्वैदिक काल से जोड़ा जाता है।

(3) बोगाज - कोई अभिलेख / मितन्नी अभिलेख (1400 ई॰पू॰) - इसमें वैदिक देवताओं इन्द्र, मित्र, वरुण और नासत्य का उल्लेख है।

(4) कस्सी अभिलेख (1600 ई॰पू॰)

(ख) साहित्यिक साक्ष्य - ऋग्वेद में 10 मण्डल एवं 1028 सूक्त हैं। पहला एवं दसवाँ मण्डल बाद में जोड़ा गया है जबकि दूसरा से 7वाँ मण्डल पुराना है।

Scanned with CamScanner

आर्यों की राजनैतिक अवस्था —

सर्वप्रथम जब आर्य भारत में आये तो उनका यहाँ के दास अथवा दस्यु कहे जाने वाले लोगों से संघर्ष हुआ, अन्ततः आर्यों को विजय मिली। ऋग्वेद में आर्यों के पाँच कबीले के होने की वजह से पंचजन्य कहा गया। ये थे - पुरू, यदु, अन, तुर्वश एवं द्रुह्यु। भरत, क्रिवि एवं त्रित्सु आर्य शासक वंश के थे। भरत कुल के नाम से ही इस देश का नाम भारतवंश या भारतवर्ष पड़ा। इनके पुरोहित थे- वशिष्ठ। कालान्तर में भरत वंश के राजा सुदास तथा अन्य दस जनों, पुरू, यदु, तुर्वश, अनु, द्रुह्यु, अलिन, पक्थ, भलानस, विषाणिन और शिव के मध्य दाशराज्ञ युद्ध परूष्णी (रावी) नदी के किनारे लड़ा गया जिसमें सुदास को विजय मिली। कुछ समय पश्चात् पराजित राजा पुरू और भरत के बीच मैत्री सम्बन्ध स्थापित होने से एक नवीन 'कुरू' वंश की स्थापना की गयी।

ऋग्वैदिक काल में समाज कबीले के रूप में संगठित था, कबीले को जन भी कहा जाता है था। कबीले या जन का प्रशासन कबीले का मुखिया करता था, जिसे 'राजन' कहा जाता था। इस समय तक राजा का पद आनुवंशिक हो चुका था। राजा को जनस्य गोपा तथा पुरयेत्ता कहा जाता था। इसके अतिरिक्त राजा की अनेक उपाधियाँ थीं - विशपति, गणपति, ग्रामणी आदि। कबीले के लोग स्वेच्छा से राजा को कर देते थे। जिसे वलि कहा जाता था। 'राष्ट्र' की क्षेत्रीय अवधारणा धीरे-धीरे विकसित हो रही थी क्योंकि ऋग्वेद के 10वें मण्डल में राजा से राष्ट्र की रक्षा करने को कहा गया है। ऋग्वेद में 'जन' शब्द का उल्लेख 275 बार मिलता है जबकि जनपद शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं मिलता है।

Scanned with CamScanner